खगोल वैज्ञानिकों की कमी चिंताजनक

उमाशंकर मिश्र

जयपुर, मार्च 07 (इंडिया साइंस वायर): □□□□ में □□ □□□ □□□ □ख्या में □□क्ट□, □□□निय□ □□ □□□□□ प्रोफे□□□□ □□□ □□□□हैं, □□ □□ □□□ □□□□ विज्ञानियों की □□□ □□,□ □□□ □□□ की □□□दी □□□□□ □□ में □□□□ 500 □□700 □□□□ विज्ञान□ ही □□□ □□हैं.

□रुत्वीर□ □□गों की □□□ □□ □र्टी □□□□ □लीस्को□ (टीए□टी) □□□ □□□ □□□□□ष्ट्री□ विज्ञान □रि□□□□□□□□ में □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ विज्ञान की □□ स्थिति □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ में □□□□□□ □लीस्को□ □□ □□□हैं, □□ □में □□□□ □ज्ञानिकों □□□□□□□□□□ □□□ □धिव □□□□ विज्ञानियों की □□श्यव□□ □,□कि □□□□ विज्ञान □□□□स्यों के □□□□ □□ □□□ □□□तें □स्ट्रोनोमिव□ □□□□टी □□ □डिय□ □□□ध्यक्ष प्रो. □□□□□□□□ □□□स्था □□□र्षिक सम्म□□ में □□□□□□ □□ □ही हैं. □□□□ □□ बिर□□ प्लेने□रिय□ में □□ □रीय □□ □□□□□□□□□□ □□□ दिव□□□ □र्यक्र□ में □□ □□ □□□ज्ञानिव □□□□ विज्ञान □□□□स्यों □□ □□□ □लिए □□□हैं.

□□ □□□□ □□ प्रो. □□□□ □□□□□ कि '□□□□ □□□तिह□□ में □□□□ विज्ञान □□ □च्छा प्र□□□ □□□ □□□□ □र्यभ □□□□स्क□□□र्य □□□□□ □□ □□ □□□□ में □□□□ विज्ञान □□फी □□□ □□□ □□ □□निव □□□□ विज्ञान में □□ली □□□ □लिलिय□ □□लीस्को□ □□ □□□□□ किय□ □□. हिन्दुस्ता□ में □□ □□□□ □□स्त्र की विर□□□ की □□□ □□□□ □,□□ □□में □□□□□□□□ □□ □□□□ □□त्व □□□□□ □□□ □न्न□ की □□□□□□ □□ □स्मानिय□ विश्वविद्या□□ की □□□□ □□□□□□ □□ □□ विश□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□ में □□□□ □□□□□□ नें □□□-□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□. □□□□ □□□□□□ □ज्ञानिव □□ □□ □□□ □□□□□ □□ निभ□□□ □□□□ □□□हैं.'

प्रो. □□□□□□□□ □□□□□ कि □□□□ □□□□□□ □ज्ञानिव □□ □□□□□ष्ट्री□ □□त्व□क्षी □रि□□□□□□में □□ □मिल □□□हैं .□□ □□ □रि□□□□□□□□□प्राप्त □□ड़ों □□विश्लेष□ □□लिए □में ज्या□□ □□ज्या□□ □□□□ सेंटर्स की □रू□□ □□

□□□□ विज्ञान □□□रिय□□□□ □ढ़ी में □□ विज्ञान □□प्रति रुचि □□□ की □□ □□ □□□□ □□□न्होंने □□□ कि '□□□ □□ □ड्ढे □□□□□□□हैं, □नि □□□र्द-गिर्द □□ □□□□ □□□□ दिर□□ □□□ □,□च्चे स्कूली शिक्षा □□□□□□ ही □□ □तों □□रु□रु होंगे,□□ □□में □□□□ विज्ञान □□प्रति □□ स्वा□□विव रुचि □□□ □□□. □□ □□□ की □□□ □□□□□□ विज्ञान □□ □□□□□□ □□□रीब □□□□□□ □□□, □□□ □□□□ □ज्ञानिकों की □□□ □री □□□□ □□ □□□□□ □□□□ विज्ञान □□ □□ □□□ □□□. □□□□□□□□लीस्को□ □□ □□□□ □□□ रु□□□□□□□□ □□ □र्च में □□□□ □□ □□□□हैं.'

उल्लेखनीय है कि 1970 में अपनेगठन के बाद सेलेकर अब तक ए स्ट्रोनों कल सोसाइ टी ऑफ इं यि युवाओंको खगोल विज्ञान सेजोड़नेके लिए लगातार काम कर र ही है उन की उपल ब्धियों को सामनेलाया जा सके, इसके लिए यह सं था उभरतेहुए वै ानिकों को मंच प्रदान करती है। (इं या साइंस वायर)